English:

Hilly Escapade

A flight of 1,175 steps leads from the base of the hills to the top. On top is former Mysore ruler Tippu Sultan's summer retreat and the remains of Tippu's fort bear this out. Tippu's Drop, a 600-metre high cliff face, where prisoners were hurled down the precipice, is an awe-inspiring sight.

I am referring to Nandi hills that are 60 kilometres outside Bangalore and takes over two hours to reach it. Some say, it is so called because it is said to resemble a sleeping bull. However, my efforts to take pictures of it from a distance proved futile as the way to it is filled with sharp turns, vertical ascents and also because it is only one of the many mountains in the hilly range. Adding to the complexity were clouds that hovered over mountains like dew drops over a flower. Though you did get to walk in the clouds and photograph the sun's rays falling over Bangalore from 4851 metres above sea level, the picture of the sleeping bull remained elusive throughout my journey.

But first the beginning. Like many historical hotspots, Nandi hills are filled with stories that talk about its origins. Many centuries ago, Rishi Kushmand apparently meditated in the hills, thereby giving it the name of Kushmand Parvath. One story talks about the Chola period when Nandi Hills was called Ananda Giri, which meant The Hill of Happiness. Another story is that Lord Nandeeshwara did his penance here and is therefore named after him. However, it is said that Nandi (the Bull) also meditated here and coaxed Lord Nandeeshwara to let this place be named after him. That's when Kushmand Parvath came to be known as Nandi Betta. Among all the stories, Lord Nandeeshwara's story has some concrete proof in the form of the Yoga Nandeeshwara temple at the top of the hill. It's a small yet beautiful Chola temple that has an inscription of Sambhaji, Shivaji's son. The Dwarapalakas and the splendid metallic figures are not to be missed. Not to mention, the exquisite, intricate carvings.

Hindi:

पर्वतीय शरारत

1,175 कदम की एक उड़ान, पहाड़ियों के आधार से उपर की ओर जाता है। शीर्ष पर पूर्व मैसूर शाषक टीपू सुल्तान का गर्मियों में पिछे हटने का और टीपू के किले का अवशेष है। टीपू का गिराव, एक 600 मीटर उँचे पहाड़ी से जहॉ से कैदियों को फेंका जाता है, एक विस्मित कर देनेवाली प्रेरणादायक दृष्टि है । मैं नन्दी पहाड़ी के संदर्भ में बात कर रहा हूॅ जो बंगलोर के बाहर 60 किलोमीटर की दूरी पर है और यहॉ पहुॅचने में लगभग 2 घटं` लगते ह‌ै। कुछ का कहना ह‌ै कि ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह सोते हुए बैल जैसा दिखता है । यद्यपि दूर से तस्वीर लेने का मेरा प्रयास व्यर्थ साबित हुआ इसका रास्ता उर्ध्वाधर और तेज घुमाव वाला है और क्योंकि यही सिर्फ पर्वतीय श्रेणी में, कई पहाड़ों में से एक है । जटिलता को और जोड़ता है मंडराते हुए बादल जो पर्वतों

के उपर इस तरह फैले हैं जैसे फूलों पर ओस की बूंदें । वैसे तो आप बादलों में चल पातें है और बंगलोर पर गिरती हुई सूर्य की किरणों का तस्वीर समुद्रतल से 4,851 मीटर की उॅचाई से लेते हैं, लेकिन सोता हुआ बैल मेरी यात्रा के दौरान मायावी ही बना रहा ।

लेकिन पहले शुरूआत । कई ऐतिहासिक आकर्षण केन्द्र की तरह नन्दी पहाड़ी कहानियों से भरी हुई है जो इसके मूल के बारे में बताती हैं । कई सदियॉ पहले, ऋषि कुष्माडं प्रकट रुप से पहाड़ी पर साधना करते थे, इस तरह इसका नाम कुष्मांड पर्वत हो गया । एक कहानी चोल समय की बात करती है जब नन्दी पहाड़ी को आनंदगिरी के नाम से पुकारा जाता था, जिसका मतलब था खुशियों की पहाड़ी । दूसरी कहानी है कि भगवान नंदीश्वर ने यहीं पर तपस्या की इसलिए इस पहाड़ी का नाम उनके नाम पर पड़ा। हालॉकि ऐसा कहा जाता है कि नंदी बैल ने भी यहीं पर तपस्या की थी और भगवान नंदीश्वर को इस जगह का नाम उसके नाम पर रखने के लिए मनाया । तभी से कुष्मांड पर्वत

नंदी बेट्टा के रुप में जाना जाने लगा । सभी कहानियों में से भगवान नंदीश्वर की कहानी का कुछ साकार सबूत, योग नंदीश्वर मंदिर के रुप में, पहाड़ी के शीर्ष पर स्थित है । यह एक छोटा परन्तु सुन्दर चोल मंदिर है जिसमें शिवाजी के पुत्र शांभाजी का शिलालेख है । द्वारपालकों और शानदार धातु की मूर्तियॉ देखने योग्य है एवम् चूकने योग्य नहीं है । इसके अतिरिक्त, उत्कृष्ट और जटिल नक्काशियॉ ।